SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

भारत में बेरोजगारी की समस्या वर्तमान समय के लिए चुनौती

रशमी गुप्ता
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, (उ0प्र0)

सारांश

वर्तमान में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ी आबादी वाला भारत देश, जो कि कभी सोने की चिड़िया कहलाया जाता था, आज एक बहुत बड़ी समस्या से जूझ रहा है। इस समस्या का नाम है ***बेकारी या बेरोजगारी****। विश्व के दूसरे देशों में भी बेकारी की समस्या है, पर भारत जितनी उग्र नहीं। आज यह समस्या अपनी चरम सीमा पर है, जिसके चलते देश की राजनीति में भी सत्ता–पक्ष और विपक्ष अक्सर तू–तू, मैं–मैं करते नजर आते हैं। बेराजगारी की स्थिति अति भयावह है। सरकार मूकदर्शक भर बनी हुई है। चूंकि बेरोजगार किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए अभिशाप माना जाता है। बेरोजगार युवावर्ग की शक्ति एवं ऊर्जा के प्रयोग के लिए उन्हें सही शिक्षा और उसके पश्चात् उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा है, फलस्वरूप देश का युवा भटक रहा है, जिसके कारण देश में भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अराजकता इत्यादि जैसी अनेक बुराईयाँ जन्म ले रही हैं। कार्य में सक्षम होने के बावजूद व्यक्ति को उसकी आजीविका के लिए किसी रोजगार के न मिलने, रोजगार के अभाव में व्यक्ति के मारा–मारा फिरने के कारण वह तमाम तरह के अवसाद में घिर जाता है। फिर तो न चाहते हुए भी कई बार वह ऐसे कदम उठा लेता है, जिनकी कानून इजाजत नहीं देता। बेरोजगारी अथवा बेकारी हमारे देश की ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की एक बड़ी समस्या है। बेरोजगार व्यक्ति हर मुमकिन या नामुमकिन कार्य करना चाहता है, मगर दुर्भाग्यवश उसे नौकरी नहीं मिल पाती है।*

बेरोजगारी का अर्थ :

''बेरोजगारी का अर्थ है योग्यता और प्रतिभा के बावजूद रोजगार के अवसर पाने में नाकामयाब होना।''

बेरोजगारी की इस परिधि में बालक, वृद्ध, रोगी, अक्षम, अपंग अथवा पराश्रित व्यक्तियों को सम्मिलित नहीं किया जाता। जब काम की कमी तथा काम करने वालों की अधिकता हो, तब भी बेकारी की समस्या उत्पन्न होती है।

वर्ष 1951 में भारत में 33 लाख लोग बेरोजगार थे। वर्ष 1961 में बढ़कर यह संख्या 90 लाख हो गयी। आज हमारे देश में 30 करोड़ से अधिक लोग बेरोजगार घूम रहे हैं।

हमारे देश में लाखों युवकों के पास डिग्री और अच्छी शिक्षा है, फिर भी किसी कारणवश उन्हें नौकरी नहीं मिल पाती है। हमारे देश में बेरोजगारी जैसी समस्याएं निरंतर ज़ोर पकड़ रही है। सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों के पास सेवाओं से वंचित वर्गों को उचित आर्थिक अवसर प्रदान करने की भरपूर क्षमता है।[1]

हमारे देश में नौजवान के पास उच्च शिक्षा संबंधित डिग्रियां होने के बावजूद उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार रोजगार के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं। हर रोज़ युवक इंटरव्यू की लम्बी कतारों में खड़े होते हैं और आए–दिन कई दफ्तरों के चक्कर लगाते हैं, ताकि उन्हें एक बेहतर नौकरी मिल जाए। कुछ–एक को छोड़कर कई युवकों को नौकरी न मिलने के कारण अपने हाथ मलने पड़ते हैं।

बेरोजगारी के प्रकार :

बेरोजगारी की गम्भीर समस्या के कारणों को जानने से पहले इसकी स्थितियों को जानना अति आवश्यक है। दरअसल बेरोजगारी को कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है, जो निम्नवत् हैं–

- **खुली बेरोजगारी :** यह एक ऐसी स्थिति है, जहाँ बेरोजगारों के एक बड़े हिस्से को नौकरी नहीं मिलती है, जिससे उन्हें नियमित आय नहीं मिलती। यह ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति को संदर्भित करता है, जहाँ लोग काम करने के लिए इच्छुक हैं, मगर उन्हें कार्य नहीं मिल पाता है। वे लोग काम करने में सक्षम हैं पर रोजगार नहीं मिल पाता है। गांव से शहरों की ओर लोगों का पलायन इसकी मुख्य वजह होती हैं।
- **साक्षर बेरोजगारी :** यह सबसे भयावह तरह की बेरोजगारी है, जब शिक्षित युवक अपने शिक्षा के अनुरूप उचित रोजगार पाने में असमर्थ होते हैं। वे अच्छे शिक्षित युवक तो हैं लेकिन उपलब्ध नौकरियों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि नहीं होने के कारण वे शिक्षित बेरोजगार होते हैं।
- **घर्षणात्मक बेरोजगारी :** बाजार मे आए उतार–चढ़ाव या मांग में परिवर्तन जैसी स्थितियों के कारण उत्पन्न बेरोजगारी की अवस्था को घर्षणात्मक बेरोजगारी कहते हैं।
- **मौसमी बेरोजगारी :** यह बेरोजगारी वर्ष के कुछ मौसमों के दौरान होती है। कुछ उद्योग और व्यवसाय, जैसे कृषि और बर्फ कारखानों आदि में उत्पादन गतिविधियां केवल कुछ मौसमों में ही होती हैं। इसलिए एक वर्ष में एक निश्चित अवधि के लिए रोजगार प्रदान करते हैं। लेकिन बाकी महीनों में इस प्रकार की गतिविधियों में लगे लोग बेरोजगार हो जाते हैं। यही बेरोजगारी मौसमी बेरोजगारी कहलाती है।
- **नगरीय बेरोजगारी :** गांव में रोजगार नहीं मिलने के कारण लोग शहर की ओर पलायन करते हैं, परन्तु शहरों में सभी को काम नहीं मिल पाता। ऐसी बेरोजगारी नगरीय बेरोजगारी कहलाती है।
- **ग्रामीण बेरोजगारी :** गांव के लोग पहले आपस में ही काम का बंटवारा कर लेते थे, कोई कृषि कार्य में संलग्न रहता था, तो कोई गांव के अन्य कार्य को संपन्न करता था। लेकिन अब कोई भी किसी भी कार्य को कर रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के अधिकतर लोग बेरोजगार हो गए हैं।
- **संरचनात्मक बेरोजगारी :** यह नियमित अंतराल पर व्यापार चक्र के कारण होती है। आमतौर पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाएं व्यापार चक्र के अधीन होती हैं, जिसके चलते व्यावसायिक गतिविधियों में गिरावट आती है।

औद्योगिक क्षेत्र में जब संरचनात्मक परिवर्तन होते हैं, तो इससे कुछ अल्प दक्ष अनावश्यक कर्मचारियों की छटनी के कारण उत्पन्न बेरोजगारी संरचनात्मक बेरोजगारी कहलाती है।

- **अल्परोजगार :** ऐसे श्रमिक, जिनको कभी–कभी ही काम मिलता है हमेशा नहीं, इस बेरोजगारी के अंतर्गत आते हैं।
- **छुपी हुई अथवा अदृश्य बेरोजगारी :** ऐसी बेरोजगारी कृषि क्षेत्र में दिखाई पड़ती है। खेतों में कुछ ऐसे श्रमिक भी कार्य करते हैं, जिनकी उत्पादकता शून्य होती है, जिनको यदि काम से हटा दिया जाए तो उत्पादन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इस स्थिति में लोग कार्य करते दिखाई पड़ते हैं, पर वास्तव में देखा जाए तो वे बेरोजगार ही होते हैं, क्योंकि उत्पादन में उनकी कोई भागीदारी नहीं होती। यही अदृश्य बेरोजगारी होती है।

बढ़ती बेरोजगारी के कारण तथा समाधान :

भारत में आज केवल सामान्य शिक्षित ही नहीं, अपितु तकनीकी शिक्षा प्राप्त डॉक्टर, इंजीनियर, टैक्नीशियन तक बेरोजगार हैं। रोजगार केन्द्रों में बढ़ रही सूचियाँ इस भयावह स्थिति की साक्षी हैं। बढ़ती बेरोजगारी के मुख्य कारण इस प्रकार हैं–

- **जनसंख्या वृद्धि :** जनसंख्या के अनुसार विश्व में भारत दूसरे स्थान पर आता है। चीन पहले स्थान पर है। परन्तु चीन में अब जनसंख्या वृद्धि में स्थिरता आयी है। बहुत सम्भावना है कि भारत अगले दशक तक विश्व में जनसंख्या में पहले स्थान पर आ जाए। जनगणना के ताजे आँकड़े यही इशारा करते हैं कि जनसंख्या की बढ़ोत्तरी की गति थमने का नाम नहीं ले रही है। देश की विशाल जनसंख्या के आगे उपलब्ध संसाधन बौने हो रहे हैं। जितनी अधिक जनसंख्या होगी, उतना ही रोजगार के स्तर पर मुकाबला होगा, जिसमें अधिकतर लोगों को रोजगार के अवसर नहीं मिलेंगे अर्थात् नौकरी के पोस्ट यानी पद कम होंगे और उम्मीदवार अधिक होंगे। जिसके फलस्वरूप गिने–चुने लोगों को ही योग्यता के अनुसार नौकरी मिलेगी। इस प्रकार बेरोजगारी का पहला कारण बढ़ती जनसंख्या है। बढ़ती जनसंख्या के जीवन–निर्वाहन हेतु अधिक रोजगार सृजन की आवश्यकता को देखते हुए इस दिशा में प्रभावी कदम उठाने की जरूरत है। बिना जनसंख्या को रोके बेरोजगारी पर लगाम नहीं लगाई जा सकती है।
- **दोषपूर्ण शिक्षा–पद्धति :** बेकारी का दूसरा कारण हमारे यहां की दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति है। अंग्रेजी व्यवस्था ने हमारे उद्योग पर आघात किया और हमारी पीढ़ियों को निकम्मा बना गए। उनके द्वारा प्रारम्भ की गयी शिक्षा प्रणाली में इंसान को सिर्फ क्लर्क ही बनाया जा सकता है। आज का युवक नौकरी चाहता है, परन्तु हाथ के काम, स्वरोजगार के लिए प्रेरित नहीं होता। भारत में सैद्धांतिक शिक्षा पर जोर दिया जाता है। ऐसे व्यक्ति के पास उच्च शिक्षा की उपाधि होती है, परन्तु न तो वह किसी कार्य में दक्ष हो पाता है और न ही अपना कोई निजी व्यवसाय शुरू कर पाता है। इस तरह दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली बेरोजगारी को बढ़ाने में काफी हद तक जिम्मेदार है। वर्तमान परिवेश को देखते हुए हमें अपनी शिक्षा को रोजगार–उन्मुख बनाना होगा। वर्तमान में सरकार इस बात पर भी बल दे रही है कि देश के सभी युवक स्वावलंबी बनें। वे केवल सरकारी सेवाओं पर ही आश्रित न रहें।[2] प्रशिक्षण केन्द्र, व्यावसायिक शिक्षा इत्यादि को प्रोत्साहन देना होगा। हालांकि सरकारी

एवं निजी क्षेत्र में अनेक कॉलेज एवं संस्थान खोले गये हैं, लेकिन ऊंची फीस होने के कारण इन संस्थानों में दाखिला लेना हर किसी के वश की बात नहीं है। इसलिए सरकार इन संस्थानों की फीस एवं अन्य खर्चे कम करने के प्रयास करे, ताकि आम आदमी भी अपने बच्चों को इंजीनियर, वैज्ञानिक तथा कुशल कारीगर बना सके।

- **अंग्रेजी शासकों का स्वार्थ** : प्राचीन भारत में एक सुदृढ़ ग्राम केन्द्रित अर्थतन्त्र था, जो ग्रामोद्योग पर केन्द्रित था। विदेशी–शासकों ने अपने स्वार्थ के लिए इस अर्थतन्त्र को तोड़कर, भारतीयों को नौकरियों का प्रलोभन देते हुए अपने रंग में रंग लिया। लालच में आकर भारतीय अपने पैतृक व्यवसाय को छोड़कर शहरों की ओर भागने लगे। इससे शहरों की स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था जर्जर हो गई।

- **कुटीर एवं उद्योग धन्धों का चौपट होना :** पहले अधिकतर ग्रामीण कुटीर उद्योगों से अपनी आजीविका चलाते थे। लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धों के चौपट होने से बेरोजगारी बढ़ी। बड़ी–बड़ी औद्योगिक इकाईयों के उत्पादन से जहां उपभोग की वस्तुओं में वृद्धि हुई वहीं देश के लघु एवं कुटीर उद्योग धन्धे चौपट हो गये। देश के विभिन्न भागों में औद्योगिक उत्पादन से पूर्व कुटीर धन्धों में देश की अधिकांश जनशक्ति कार्यान्वित थी, वह बेरोजगार हो गई। ब्रिटिश सरकार की कुटीर उद्योग–विरोधी नीतियों के कारण देश में इनका पतन होता चला गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी इसके उत्थान के लिए कुछ विशेष प्रयास नहीं किए गए, जिसके परिणामस्वरूप गांव की अर्थव्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गई और ग्रामीण बेरोजगारी में वृद्धि हुई। महात्मा गाँधी कहते थे कि मशीन लोगों से उनके रोजगार छीन लेती है। जैसे–जैसे मध्यम तथा भारी उद्योगों का विस्तार होने लगा, कुटीर उद्योग–धन्धे लुप्त होते गए, जबकि कुटीर उद्योगों में पूँजी भी कम लगती है, साथ ही काफी लोगों को रोजगार मिल जाता है। लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास करना भी समय की मांग है। बंद पड़े कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

- **कृषि क्षेत्र में सुधार का अभाव :** हमारा देश प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है, किन्तु तकनीक के अभाव में हम उनका समुचित उपयोग नहीं कर पाते। अंग्रेज शासकों ने ब्रिटेन के हित में देश के संसाधनों का खूब दोहन किया। भारत की अधिकतर आबादी कृषि पर निर्भर है, किन्तु कृषि के पिछड़ेपन के कारण इस क्षेत्र के लोगों को सालों रोजगार नहीं मिल पाता। सरकार को इस क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार मुहैया हो सके। इसके अलावा सरकार देश में उत्पादित कृषि वस्तुओं की विदेश में विपणन की समुचित व्यवस्था भी करे। यही नहीं, उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता में भी सुधार की आवश्यकता है।

- **शहरी जीवन की चकाचौंध :** शहरों की चमक–दमक आज एक ओर तो शहरियों को रोजगार मिलने पर भी गाँव जाने से रोकती है, दूसरी ओर ग्रामीणों को शहर की ओर आकर्षित करती है। पक्के घर, बिजली, रेडियो, फ्रिज, सिनेमा, आदि के लिए लालायित नई पीढ़ी का गाँव में मन नहीं लगता। इससे एक ओर तो ग्रामोद्योगों की समाप्ति होती है तो दूसरी ओर शहरों में भीड़ बढ़ने से नए रोजगार न मिलने की समस्या विकट होती जा रही है।

- **दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था** : हमारे देश में कुछ कार्यों को सामाजिक दृष्टि से हेय माना जाता है अतः उन कार्यों में रोजगार के अवसर प्राप्त होते हुए भी उन्हें करने में हिचक के कारण युवा वर्ग उनसे बचता है। शारीरिक श्रम के प्रति भी लोगों में गौरव की भावना नहीं है, जिससे बेरोजगारी बढ़ती है। दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था से वर्तमान में बचने का प्रयास करना होगा।
- **महिलाओं की सहभागिता** : उद्योग धन्धों, वाणिज्य व्यापार तथा सभी नौकरियों के क्षेत्र में महिलाओं का सहभागी होना भी बेकारी बढ़ा रहा है। पहले जीविकोपार्जन का कार्य केवल पुरुषों का था, परन्तु आज शिक्षा के विस्तार तथा टेलीविजन के विस्तार के कारण महिलाओं में भी चेतना आई है और वे हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं। शिक्षा तथा चिकित्सा के क्षेत्र में तो महिलाओं का योगदान अभूतपूर्व है। परन्तु समस्या बेकारी की है, क्योंकि जब महिलाएँ भी नौकरी करेंगी तो पुरुषों के लिए तो रोजगार का अभाव होना निश्चित ही है। वर्तमान में महिलाओं के लिए नये रोजगार के स्रोतों की अपरिहार्य आवश्यकता है।आर्य समाज ने सारे भारत में अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करके सभी जातियों की महिलाओं की शिक्षा के लिए द्वार खोल दिये। इन संस्थाओं से शिक्षा ग्रहण करके भारतीय समाज का हर तबका विशेषकर महिलाएं और शुद्र वर्ग में नव चेतना का संचरण हो उठा।[3] शिक्षा, चिकित्सा एवं समाजकल्याण आदि के क्षेत्रों में पुरुषों को भी नवीन अवसर प्रदान कराये जाएं। इन प्रयासों से बेरोजगारी की विकरालता पर कुछ हद तक अंकुश लगाया जा सकता है। जो महिलाएं स्वयं रोजगार करने की चाह रखती हैं उन्हें क़र्ज़ प्रदान करना सरकार की जिम्मेदारी होनी चाहिए।
- **आर्थिक मन्दी** : आज दुनिया के अधिकांश देश मन्दी की मार झेल रहे हैं, साथ ही कर्ज में डूबे हुए हैं। आज हर क्षेत्र में छंटनी का दौर चल रहा है और बेकारी की समस्या बढ़ रही है। पिछले कुछ दिनों में सरकारी प्रतिष्ठानों में न केवल भर्तियाँ बन्द हैं, वरन् छंटनी कार्यक्रम चल रहे हैं। आज बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ, जैसे एयर इंडिया, रिलाइन्स आदि भी कितने ही कर्मचारी निकाल चुके हैं। निजी क्षेत्रों में मशीनों के नवीनीकरण तथा आटोमेशन के चलते भी रोजगार बहुत कम पैदा हो रहे हैं।
- **मशीनीकरण** : औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ता मशीनीकरण भी बेरोजगारी का प्रमुख कारण है, जिसके अंतर्गत एक मशीन चुटकी भर में कई लोगो के काम कर देती है, जिससे कई लोग बेरोज़गारी के दर पर आकर खड़े हो जाते हैं। मशीनें कम समय में जल्दी कार्य कर सकती हैं। उदारीकरण के चलते पूंजी, तकनीकि, श्रम, बाजार आदि के वैश्वीकरण को बढ़ावा मिला है।[4] इसी वजह से लोगों को रोजगार के अवसर मिलना बिल्कुल न के बराबर हो गया है। प्रत्येक वर्ष मशीनों के आने से लघु व्यवसाय ठप होने लगे और बेरोजगारी का दल जमा होने लगा। कंप्यूटर का अविष्कार मानवजाति के लिए महत्वपूर्ण है, मगर इसने कई लोगों के रोजगार के मौको को भी छीना है। देश में कल–कारखानों और नए उद्योगों की स्थापना करनी होगी, जहाँ बेहतर रोजगार के अवसर मिल सकें।

भारत में बेरोजगारी के वर्तमान आंकड़े :

भारत में बेरोजगारी की जड़ें काफी गहरी हैं, जिसे भारत की अहम समस्या माना जा रहा है। भारत में बेरोजगारी की कितनी बड़ी समस्या है, इसका जवाब ये आंकड़े हैं :

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

सीएमआईई (सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी), जो कि मुंबई स्थित एक स्वतंत्र गैर– सरकारी संस्था है। इसके आंकड़ों की मानें तो मार्च 2022 में भारत में कुल बेरोजगारी दर में गिरावट दर्ज हुई है। इस वक्त बेरोजगारी दर गिरकर 7.6 प्रतिशत है। फरवरी 2022 में यह दर 8.10 प्रतिशत थी। लेकिन यहाँ यह कहना भी अनुचित न होगा कि भारत जैसे गरीब और बड़ी जनसंख्या वाले देश के लिए भी ये आंकड़े अधिक हैं। मगर, इन आंकड़ों का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि कोरोना महामारी से जूझने के दो साल बाद बेरोजगारों के अनुपात में कमी के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट रही है।

सीएमआईई के आंकड़ों से पता चलता है कि मार्च 2022 में सबसे अधिक बेरोजगारी दर वाला प्रदेश हरियाणा रहा। यहां 26.7 प्रतिशत बेरोजगारी दर्ज की गई। वहीं दूसरे नंबर पर राजस्थान में 25 प्रतिशत तथा जम्मू और कश्मीर में भी यह दर 25 फीसदी दर्ज की गई। वहीं कांग्रेस शासित राज्य छत्तीसगढ़ में इस मार्च तक 0.6 फीसदी बेरोजगारी दर्ज की गई। छत्तीसगढ़ का आंकड़ा बताता है कि यह दर अब तक की सबसे कम है।

डेटा सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के आधार पर भारत में दिसंबर 2021 तक 53 मिलियन यानी 5.3 करोड़ लोग बेरोजगार रहे। इनमें से 35 मिलियन यानी 3.5 करोड़ लोग तो वे थे, जो एक्टिवली रोजगार की तलाश में रहे। मतलब ये लोग तो मेहनत करके रोजगार की तलाश में थे और उन्हें जल्द से जल्द रोजगार की आवश्यकता थी। इसमें से 8 मिलियन संख्या महिलाओं की रही। वहीं, 17 मिलियन यानी 1.7 करोड़ लोग वे थे, जिन्हें काम चाहिए मगर वे सक्रिय होकर अभी जॉब नहीं ढूंढ रहे थे। इसमें महिलाओं की संख्या 9 मिलियन थी। सीएमआईई का कहना है कि वर्ल्ड बैंक ने साल 2020 में महामारी की मार में वैश्विक रोजगार दर 55 प्रतिशत और 2019 में 58 प्रतिशत आंकी थी। जबकि भारत 43 प्रतिशत के स्तर पर था। हालांकि, सीएमआईई के अनुसार यह दर 38 फीसदी रही। वहीं, वर्तमान में अगर भारत ग्लोबल एम्पलॉयमेंट रेट स्टेंडर्ड तक पहुंचना चाहे तो भारत को 187.5 मिलियन लोगों को रोजगार देना होगा। बिखरे हुए विभिन्न तथ्य यह स्पष्ट संकेत करते हैं कि समेकित एवं सामूहिक रूप से हमारा विकास नहीं हो सका है और बहुसंख्यक आबादी वंचित है, धनी और गरीब के बीच फासला बढ़ रहा है और अधिकतर लोगों तक मूलभूत सुविधाएं भी नहीं पहुँच सकी हैं।[5]

बेरोजगारी के दुष्परिणाम :

बेरोजगारी के कई दुष्परिणाम होते हैं। बेरोजगारी के कारण निर्धनता में वृद्धि होती है तथा भुखमरी की समस्या उत्पन्न हो जाती है। समाज में अपराध–हिंसा में वृद्धि होती है और सबसे बुरी बात तो यह है कि बेरोजगार व्यक्ति को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए अपने घर ही नहीं बाहर के लोगों द्वारा भी मानसिक रूप से प्रताड़ित होना पड़ता है। मानसिक अशांति की स्थिति में लोगों की चोरी, डकैती, हिंसा, अपराध की ओर होने की पूरी संभावना होती है। अपराध एवं हिंसा में हो रही वृद्धि का सबसे बड़ा कारण बेरोजगारी है। कई बार तो बेरोजगारी की भयावहता से तंग आकर लोग आत्महत्या भी कर बैठते हैं। कभी बेरोजगार को नौकरी न मिलने से वह गलत संगत में पड़ जाता है और शार्ट कट से पैसे कमाने के चक्कर में गलत रास्ता पकड़ लेता है।

सरकारें आयीं और गयीं, लेकिन बेरोजगारी की समस्या हल होने का नाम ही नहीं लेती है। बेकारी के कारण ही समाज में लूट–पाट, हत्या, बलात्कार, चोरी–डकैती आदि का वातावरण है। आत्मग्लानि व आत्महीनता के भावों से भरा आज का बेकार युवा समाज के नियमों का उल्लंघन कर अपने कर्तव्यों से मुँह मोड़ रहा है। बेकारी निठल्लेपन को जन्म देती है, जो आलस्य का जनक है, यह आवारागर्दी की सहोदर है तथा शैतानी की जननी

है। इससे चारित्रिक पतन होता है तथा सामाजिक अपराध बढ़ते हैं। इससे शारीरिक शिथिलता बढ़ती है तथा मानसिक क्षीणता तीव्र होती है।

युवा वर्ग की बेरोजगारी का लाभ उठाकर एक ओर जहां स्वार्थी राजनेता इनका दुरुपयोग करता है, वहीं दूसरी और धनिक वर्ग भी इनका शोषण करने से नहीं चूकते। ऐसी स्थिति में देश का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण अत्यंत दूषित हो जाता है। भारत में डिग्री से ज्यादा अगर एक्सपीरिएंस को अहमियत दी जाए तो भारत में बेरोजगारी कम हो सकती है। इसके साथ ही आरक्षण खत्म किया जाए, आज आरक्षण की वजह से अनेक प्रतिभाशाली लोग बेरोजगार हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, स्टैंड अप इंडिया, अटल पेंशन योजना, भारत बिल भुगतान प्रणाली, राष्ट्रीय इलैक्ट्रानिक टोल संग्रह : आधार–सक्षम भुगतान प्रणाली एवं तत्काल भुगतान सेवा और डिजिटल आयुष्मान भारत मिशन से भी समाज के विभिन्न वर्ग लाभान्वित हो रहे हैं।[6]

बेरोजगारी दूर करने के लिए सरकार के प्रयास :

सरकार की ओर से बेरोजगारी को दूर करने के लिए विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है। उनके तहत भारत में बेरोजगारी को कम किया जा सकता है, जिसमें बढती जनसंख्या को कंट्रोल करना, अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए बिजनेस लोन उपलब्ध करवाना आदि के अलावा प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना, मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना, शिक्षित बेरोजगार लोन योजना 2017, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) आदि हैं। इसके साथ ही प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, स्टैंड अप इंडिया, अटल पेंशन योजना, भारत बिल भुगतान प्रणाली, राष्ट्रीय इलैक्ट्रानिक टोल संग्रह : आधार–सक्षम भुगतान प्रणाली एवं तत्काल भुगतान सेवा और डिजिटल आयुष्मान भारत मिशन से भी समाज के विभिन्न वर्ग लाभान्वित हो रहे हैं। पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत बहुत से विकास कार्यक्रम चालू हैं तथा प्रगति कर रहे हैं। विदेश से आयात करने वाली चीजों पर रोक लगाना चाहिए और देश में ही ऐसी चीजों का उत्पादन करना चाहिए, जिससे देश के लोगों को काम मिल सके।[7]

अगर इन योजनाओं का सख्ती से पालन कराया जाये तो आज की पीढ़ी इनका लाभ उठा सकती है। सरकार कई तरह के स्किल ट्रेनिंग चलाकर उन्हें दक्ष करने के प्रयास करती रही है, ताकि उन्हें मुख्यधारा में लाया जा सके।

सारांश :

बेरोजगारी की समस्या एक राष्ट्रीय समस्या है तथा इसको हल करने हेतु संकल्प एवं प्रयत्न दोनों की आवश्यकता है। हमारी सरकार की ओर से इस समस्या के समाधान हेतु कई ठोस कदम उठाए गए हैं, जैसे– स्नातक बेरोजगारों को सस्ते दर पर ऋण की व्यवस्था करना, जवाहर रोजगार योजना के तहत ग्रामीणों को काम दिलाना तथा बड़े–बड़े उद्योगों की स्थापना करना इत्यादि।

हमें निराश नहीं होना चाहिए। हमारी शिक्षा–व्यवस्था में सुधार किए जा रहे हैं। अपने काम–धंधों को शुरू करने के लिए रियायती दरों पर धन उपलब्ध कराया जा रहा है। इन सब उपायों के परिणाम कुछ वर्षों में सामने आ जायेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि हम आत्मविश्वास और दृढ़ता के साथ सहयोग करें और मिल–जुल कर इस समस्या को हल करें।

—: सन्दर्भ सूची :—

1. दैनिक जागरण, दैनिक समाचार पत्र, मुरादाबाद, पृ0 सम्पादकीय, 1 अगस्त 2022.
2. https://www.essaysinhindi.com
3. समाज विज्ञान शोध पत्रिका, Vol. 1 (Part-II) April to September 2018, पृ0 185
4. भूमण्डलीकरण और मानव सुरक्षा, मुद्दे एवं चुनौतियां, सम्पादनः डॉ0 अरूण कुमार दीक्षित व डॉ0 पंकज कुमार वर्मा, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, संस्करण 2016, पृ0 533.
5. भूमण्डलीकरण और मानव सुरक्षा, मुद्दे एवं चुनौतियाँ, सम्पादन– डॉ0 अरूण कुमार दीक्षित व डॉ0 पंकज कुमार वर्मा, सत्यम पब्लिषिंग हाऊस, संस्करण 2016, पृ0 147
6. दैनिक जागरण, दैनिक समाचार पत्र, मुरादाबाद, पृ0 सम्पादकीय 15 जुलाई 2022.
7. https://thesimplehelp.com>Essay

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/13

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

रशमी गुप्ता और डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

“भारत में बेरोजगारी की समस्या वर्तमान समय के लिए चुनौती”

Published in ‘Shiksha Samvad’ Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com